अरविन्द कुमार त्रिपाठी
द्वारा
पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन





महुआ– एक वरदान
Mahua- butter tree/ HoneyTtree
A Boon

Puratan BANDA, Bundelkhand ka Sankshipt Varnan

Arvind Kumar Tripathi

ISBN : 978-93-5906-820-6

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

महुआ एक वरदान

अध्याय शीर्षक	महुआ एक वरदान
सर्वाधिकार	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
आइ एस बी एन / **ISBN**	**978-93-5906-820-6**
प्रकाशक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक ग्राम – अछरौन्ड, बान्दा – 210 001 उत्तर प्रदेश
मूल्य	निःशुल्क, पुस्तक मित्र को देना
सन्स्करण	प्रथम, 01 अप्रैल 2020
आवरण / मुखपृष्ठ	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
शब्द – संयोजन	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
मुद्रक	अरविन्द कुमार त्रिपाठी, लेखक
सन्दर्भ / साभार / सौजन्य	अध्याय **Reference** देखे

Chapter Heading	**Mahua- butter tree/ HoneyTtree A Boon**
Copyright @	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
ISBN	**978-93-5906-820-6**
Publisher	**Arvind Kumar Tripathi** **Village - Achharaund** **Banda - 210 001** **Uttar Pradesh**
Price	**Free, Circulate to Friends**
Edition	**First, 01 April 2020**
Cover Main	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Word Compositor	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Printer	**Arvind Kumar Tripathi, The Writer**
Reference/ Gratitude/ courtesy	**Peruse Chapter - REFERENCE**

महुआ– एक वरदान **Mahua- butter tree/ HoneyTtree A Boon**

महुआ– एक वरदान **Mahua- butter tree/ HoneyTtree A Boon**

पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड – कृषि महुआ चिरौंजी का संक्षिप्त वर्णन

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

महुआ एक वरदान

महुआ बुन्देलखन्ड का एक ऐसा वृक्ष है, जो कभी अंग्रेजों के समय में महत्व रखता था। जिस व्यक्ति के पास पांच महुआ के पेड़ होते थे, वह किसी का भी जमानत लेने का अधिकारी होता था। बुन्देलखन्ड में आम भी पैदा होता है जिसके बारे में कहा जाता है कि ''आम के आम, गुठलियों के दाम'' लेकिन महुआ एक ऐसा वृक्ष है जिसका शायद ही कोई ऐसा अंग हो जो जीवनदायी ना हो।

इसे प्रकृति का करिश्मा ही कहा जा सकता है जो समस्त अंगों का दान देकर लोगों का जीवन बचाता है। इसके फूल को बहुत तरीके से खाया जाता है और सूखने के बाद भी इसका उपयोग किया जाता है। इसमें आने वाली सुगंध, कहते हैं, अनंत काल तक बनी रहती है और फूल आने के समय इसमें जो सुगंध होती है, वह समय के साथ बढ़ती चली जाती है। अगर अच्छी तरह से संरक्षित किया जाए तो इसके अनुभवी कहते हैं कि अनंत काल के बाद भी अगर सूखे हुए फूल को पानी में भिगोए जाए तो यह पुनः अपने प्रारंभिक अवस्था में लौट आता है। ग्रामीण विज्ञापन के कारण शहरी लोग भी इसके द्वारा बनाए गए मिठाइयां, फल, भोजन के रुप में स्वीकार करने लगे हैं।

अनंत काल से फूल का कल अर्थात अर्क निकाला जाता रहा है और कल कभी भी खराब नहीं होता और विभिन्न प्रकार के नशा और दवाइयां में इसका भरपूर उपयोग होता आया है। जब भारत में भयंकर सूखे पड़े, तब भी इस पौधे नें इस पेड़ नें फूल व फल(गुलइदा) दिए हैं और लोगों ने इसके फल, फूल, पत्ते खाकर अपनी जिंदगी बचाई है और भुखमरी से बच सके। ऐसा एक उदाहरण कोयतुर समुदाय की पीढ़ियां हैं

इसके बीज को टोरी, डोरी, टोल आदि विभिन्न नाम से जाना जाता है और महुआ का तेल ही एक ऐसा तेल है जो कार्बोहाइड्रेट वसा प्रोटीन आदि की जरूरत को एक साथ पूरा करता है। हिमपात या यह कहें जानलेवा ठंड से भी इसका तेल बचाव करता है। उद्योगों में भी बहुत जगह इसका उपयोग किया जाता है। खाने के लिए प्राइमरी तेल, सेकेंडरी तेल को साबुन के रूप में, खल खेती के में और इसी तरह से अन्य उपयोग महुआ के इस तेल के है। तेल में विभिन्न बीमारियों से लड़ने की क्षमता होती है।

अगर पेड़ पर कहीं चोट पहुंचाई जाए तो वहां से दूध निकलता है। महुआ का दूध लेखन कला में उपयोगी रहा है। रंग अमिट व लंबे समय तक सुरक्षित रहने की प्रक्रिया के कारण लेखन, चित्र, लेख में बहुत उपयोग किया गया है। यही वजह है कि हजारों वर्ष के बाद भी उनके लिखे हुए लेख भित्ति चित्र आज भी खुले चट्टानों पर सुरक्षित हैं, जो कि मानव निर्मित दुनिया का एक अजूबा है। तेल के बाद निकला हुआ खल, खेत खलिहान और जानवरों के लिए विशिष्ट स्थान रखता है। देसी व विदेशी शराब कारोबारी माफिया के द्वारा महुआ के पेड़ को बर्बाद करने का षड्यंत्र किया जाता है ताकि उनके केमिकल युक्त देसी और अंग्रेजी फैक्ट्री निर्मित शराब का कारोबार किया जा सके।

एक कहावत है कि महुवे का पेड़ लगाने से महुआ लगाने वाले की वंश वृद्धि नहीं होती है, तो पुराने लोग महुआ के बीजों को झाड़ी के बीच वाली जगह पर फेंक देते थे। इसके पीछे एक राज था वह राज था – अगर खुले में पौधा उगेगा तो जंगली जानवर गाय बैल भैंस बकरी इनको खाकर नष्ट कर देते हैं अगर झाड़ियां में फेंका गया तो झाड़ी के बीच में उगने के कारण कोई भी जानवर इसके पत्तों को लकड़ी को नहीं खा पता व नहीं खा सकता अतः इसको बढ़ने के लिए समुचित जगह मिलती है। हमारे ऋषि मुनियों ने इसके अलावा अन्य तरीके से इसको उगाने के साधन बताएं है। इसके जीवन चक्र बहुत लंबा है। 5–6 साल के पश्चात यह फूल, फल, बीज, सब कुछ देना शुरू कर देता है और पांच पेड़ एक परिवार को पालने के लिए बहुत है।

सरकारी कर्मचारी, वन विभाग जंगलों में उगे हुए महुआ के पेड़ों को काट देते हैं या कटवा देते हैं जिसका उपयोग फर्नीचर बनाने में बहुत काम आता है। वह पेड़ उनके द्वारा प्रकृति को दिए गए विभिन्न प्रकार के 13 प्रकार के पोषक तत्व जमीन को देते हैं, लेकिन सरकारी कर्मचारी, वन विभाग जंगलों में उगे हुए महुआ के पेड़ों को कटवा कर विभिन्न प्रकार के 13 प्रकार के पोषक तत्व को जमीन से वंचित कर दिया है।

महुवा एक देवीय वृक्ष है

लगातार धरती के तापमान की बढ़ोतरी, जमीन के नीचे के पानी की समाप्ति, नदी, तालाब, बांध, झरने के पानी की बर्बादी को देखते हुए, देशी प्रजाति के पेड़ों वनस्पतियों व वन्य जीवों के साथ समन्वय को अपनाए। महुआ पेड़ की महत्व को इस प्रकार समझिए।

महुआ एक वरदान

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

महुआ वृक्ष प्रकृति का आशीर्वाद है। महुवा एक देवीय वृक्ष है, अवश्य ही एक दैवीय वृक्ष हैं।
प्रकति का करिश्मा कहें या जीवन दान
कहावत है

आम के आम, गुठलियों के दाम

लेकिन महुआ के जड़, तना, लकड़ी, पत्ते(हरे व सूखे), पत्ते तोड़ने पर निकलने वाला दूध, फूल, फल, बीज, गोंद अर्थात् सर्वाग खाद्य योग्य है।

संक्षेप

1 महुआ फूल जिसकी खुशबू अनंतकाल तक बनी रहती है।

2 महुआ फूल की सुंगध समय के साथ बढ़ती जाती है।

3 महुआ फूल को पानी में भिगोने पर, पुनः अपने प्रारंभिक अवस्था लौट आता है

4 महुआ फूल का (कल/अर्क) कभी खराब नहीं होता है

5 फूल से निर्मित कल(आसवित अर्क) हजारों सालों से इन्फेक्शन से बचाते आया है

6 ऐसा फूल जो भारी अकाल में भी फूलता है, जिसे खाकर कोयतोर समुदाय की पीढ़ियां भुखमरी से बच सकी।

7 फल गुलगुच/गुलइन्दा/कोया जिसने अकाल के समय कार्बोहाईड्रेड वसा व प्रोटीन की जरूरत को एक साथ पूरा किया है। जंगली जानवरों व गाय अक्सर इन जगहों पर आने की लत लग जाती है।

लहटी गाय गुलइन्दन जाय

8 महुआ के अद्‌भुत महुआ बीजों (टोरी/डोरी/टोल) का तेल जिसने हिमपात व जानलेवा ठण्ड से कोयतुरो की रक्षा की है। आज भी सर्वोत्तम साबुन महुआ के बीज के तेल से बनता है।

9 महुआ बीज (टोरी/डोरी/टोल) के तेल में विभिन्न बीमारियों से बचाने की क्षमता होती है।

10 महुऐ के दूध ने लेखन कला में उपयोगी रंगों को अमिट व रंग को लम्बे समय तक सुरक्षित रखने की तकनीक में मुख्य भूमिका निभाई। यही वजह है कि हजारों वर्ष बाद भी उनके लिखे भित्ति चित्र व लेख आज भी खुले चट्टानों पर भी सुरक्षित है।

मानव निर्मित दुनिया में महुआ मृत्यु के कगार पर

देशी व विदेशी शराब कारोबारी, माफियाओं के द्वारा भी महुआ पेड़ को बर्बाद करने का षड़यंत्र किया जा रहा है, ताकि इनके केमिकल युक्त देशी व अंग्रेजी फैक्टरी निर्मित शराब का कारोबार किया जा सके।

जलश्रुति है कि महुआ का पेड़ लगाने से पेड़ लगाने वाले व्यक्ति का वंश वृद्धि नहीं होती हैं अतः दादा दादी लोग महुआ के बीजों को झाड़ीनुमा जगहों पर फेंक देते थे। महुआ के छोटे पौधों को गाय, बैल, बकरी से सबसे नुकसान होता हैं अतः झाड़ीनुमा जगहों पर ये वृक्ष बच जाते है। 10–15 पौधों को रोपने पर एक ही पेड़ बनता हैं।

इस पेड़ के संरक्षण के लिए सरकार को गम्भीरता से काम करने होंगे, ताकि जंगलों में निवास करने वाले पशु पक्षियों को जंगल छोड़कर मानव बस्तियों आना जाना बंद हो सके, पर यहाँ सरकारें विकास के नाम पर शहरी मित्रो के फायदे के लिए सारे जंगल को ही उल्टा काट रहे हैं।

खनन के नाम पर जंगलों को काटा जा रहा है। चारों तरफ बर्बादी फैली हुई हैं। प्रकृति को बचाकर सर्वश्रेष्ठ जिन्दगी जीना चाहते हैं तो प्रकृति के हत्यारों को सत्ता से बाहर करो व सजा मिले।

महुआ एक वरदान

अरविन्द कुमार त्रिपाठी कृत पुरातन बान्दा, बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त वर्णन

सुबह अंधेरे में गिरे महुआ को उठकर मुंह में डाला उससे शहद से भी मीठा रस निकला और अकाल के कारण भूख से तड़पते जनता को पहली उम्मीद मिली। अकाल में अनाज खत्म था सब ने सोचा अब क्या होगा। पर लोगों ने महुआ उबालकर खाना शुरु किया जिसकी मिटास में फ्रुक्टोज और ग्लूकोज भरा था। जहां महुआ पेड़ थे वहां कोई भूखा नही मरा। यह छोटा फूल इतना ऊर्जावान था कि पूरे गांव को महीने भर सहारा दे देता था। बच्चे कमजोर थे और दूध महंगा माता पिता ने उन्हें सूखा महुआ खिलाया जिसमें चावल से कई गुना ज्यादा कैल्शियम और फास्फोरस छिपा था। सर्दियों में खांसी नहीं रुकती थी जब उसका रस पिया तो उसकी ताकत ने गला तुरन्त शान्त किया व सीने की जलन भी कम कर दी।

लोग सिर्फ फूल देखते थे पर ग्रामीण बीज पर टिके जब उसे पीसा तो उससे बटर जैसा गाढ़ा तेल निकला जो कई बीमारियों में काम आता था। उस तेल से खाना भी पकाया गया और सर्दियों में फटी त्वचा भी ठीक की। विज्ञान आज इसे कुछ भी कहता है पर यह महुआ का तेल था और इसे तेल ही रहने दो।

यह अमूल्य है। महुआ प्राकृतिक रुप से मीठा, खनिजों व औषधीय गुणों से भरपूर है। यह पौष्टिक भोजन, उर्जा गुणों से भरपूर व सर्दी दूर करने वाला दवा भी हैं।

जान बचाने वाला यह फूल गलत हाथों में केवल शराब का माध्यम नहीं बनना चाहिए महुआ वरदान है इसे भोजन और दवा रहने दो नशा नहीं।

आम के आम गुठली के दाम पर महुआ के फूल पत्ते सर्वान्ग काम आता है।

चिरौंजी

बुंदेलखंड के घने जंगलों में दशकों से चिरौंजी के हजारों पेड़ बिना पहचान के खड़े रहे और इंडियन फॉरेस्ट सर्विसेज के महान अधिकारी और वन विभाग को इसका पता ही नहीं चला। अब इसकी पहचान हुई तो विभाग ने आदिवासियों की आजीविका छीन ली। बांदा जिले के फतेहगंज क्षेत्र के जंगलों में मिले इन पेड़ों की उम्र 50 साल से अधिक है। बांदा जिले के फतेहगंज क्षेत्र को मिनीपाठा भी कहते हैं। इसमें पथरा, कोल्हुआ, कालिंजर–बहादुरपुर, देवली, खरोंच, मोतिहारी, महुई, खुटला, नौगवां, आदि जंगल के क्षेत्र हैं और इसी क्षेत्र में चिरौंजी के पेड़ चिन्हित हुए हैं। इलाके के ग्रामीण अभी तक चिरौंजी के इन पेड़ों से फल संग्रह/तोड़ते थे और महान कर्मठ वन विभाग को इसके बारे में पता नहीं था। पता चलते ही वन विभाग ने चिरौंजी/अचार संग्रह की योजना बनाई और स्थानीय आदिवासियों/ग्रामीणों को बेरोजगार कर दिया। चिरौंजी के पेड़ पर फरवरी में फूल आते हैं और मार्च अप्रैल मई होते होते इसमें फल आ जाते हैं। मई के अंत में इसके फल टूटने लगते हैं। फलों को तोड़ लिया जाता है या फिर जमीन पर पड़े फलों को संग्रहीत कर लिया जाता है। मई में पहली बार कालिंजर बहादुरपुर जंगल में चिरौंजी के पेड़ों से वन विभाग ने फलों का संग्रह किया।

चिरौंजी के फलों का संग्रह कर प्रक्रिया कर दाना निकाल कर ऑर्गेनिक उत्पादन के रूप में बाजार में बेचा जा सकता है। इसी तरह महुआ भी इसी तरह का आर्गनिक उत्पादन है।

महुआ एक वरदान